संचार माध्यम | खंड 33(1): 86-91, जनवरी-जून 2021
आईएसएसएन: 2321-2608

मीडिया शिक्षा के माध्यम से सामाजिक बदलाव

विकाश कुमार[1]

सारांश

वर्तमान युग संचार क्रांति का युग है, जहाँ जनमाध्यमों की दुनिया में नवीन तकनीक के आगमन से 'विश्वग्राम' की संकल्पना साकार होती दिख रही है। संचार और सूचना-तकनीक के क्षेत्र में हुए विकास ने राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर की पत्रकारिता और जनसंचार की कार्य-पद्धति तथा इसके व्यावसायिक स्वरूप को बदलने के साथ पत्रकारिता और जनसंचार के पठन-पाठन की परंपरागत विधियों को भी परिवर्तित और प्रभावित किया है। मुख्यधारा की मीडिया के साथ-साथ आज न्यू मीडिया के रूप में एक ऐसा माध्यम मौजूद है, जिसने सूचना और ज्ञान के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना में भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। अर्थात् वर्तमान में मीडिया और समाज एक-दूसरे को प्रभावित करने के साथ ही स्वयं एक-दूसरे से प्रभावित भी हो रहे हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र के माध्यम से मीडिया शिक्षण के जरिये समाज में हो रहे बदलावों का विभिन्न दृष्टिकोणों के माध्यम से विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

संकेत शब्द : मीडिया, समाज, मीडिया शिक्षा, पत्रकारिता, जन संचार

प्रस्तावना

भारत में पत्रकारिता का आरंभ एक मिशन के रूप में हुआ, जो स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् एक उद्योग की शक्ल में परिवर्तित होने लगा। विकास की इस प्रक्रिया में इसके बुनियादी स्वरूप, विषयवस्तु की प्रस्तुति के तौर-तरीकों के साथ-साथ इसके व्यावसायिक ढाँचे में भी आमूलचूल बदलाव आया। धीरे-धीरे पत्रकारिता की जगह 'मीडिया' ने ले ली और सूचना, ज्ञान तथा मनोरंजन के इस संसार में मुनाफे की प्रवृत्ति का वास होने लगा। इन तमाम बदलावों के बावजूद देश के सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक विकास में मीडिया की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। आजादी के आंदोलन से लेकर वर्तमान समय तक मीडिया ने आमजन को सूचना देने, शिक्षित करने तथा जनमत के निर्माण के प्रति जागरूक करते हुए मनोरंजन करने का काम भी शिद्दत से किया है। लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना और प्रसार में भी इसकी अग्रणी भूमिका रही है। इसलिए भारत में मीडिया को लोकतंत्र के चौथे स्तंभ की संज्ञा भी दी जाती है। समाज में संचार, मीडिया और संवाद के इस महत्त्व को ध्यान में रखकर ही भारत में मीडिया शिक्षा की शुरुआत की गई। दैनिक ट्रिब्यून की एक रिपोर्ट के अनुसार सन् 1912 में जोसेफ पुलित्जर ने दुनिया में पहली बार मीडिया शिक्षण और प्रशिक्षण की बात कही थी ('मीडिया पाठ्यक्रम को चुनौती..', 2020)। भारत में एनी बेसेंट ने सन् 1920 में मद्रास के 'अडियार विश्वविद्यालय' में पत्रकारिता पाठ्यक्रम की शुरुआत की। भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय द्वारा जारी वार्षिक रिपोर्ट सन् 2019-20 के अनुसार भारत सरकार ने संचार के प्रभावी उपयोग के उद्देश्य से एक मंच की स्थापना में सहायता के लिए यूनेस्को से संपर्क किया। इस योजना में विकासशील दुनिया के इस हिस्से में जन संचार प्रशिक्षण मंच स्थापित करना भी शामिल था। जन संचार अध्ययन के जनक के रूप में चर्चित अमरीकी विद्वान 'विल्बर श्रैम' के नेतृत्व में संचार विशेषज्ञों के एक दल ने 'भारतीय जन संचार संस्थान' का खाका तैयार किया और 17 अगस्त, 1965 में इस संस्थान की स्थापना हुई। भारतीय संदर्भ में शिक्षा तथा शिक्षण संस्थानों से संबंधित आँकड़ों तथा तथ्यों को ऑनलाइन प्रस्तुत करने वाली वेबसाइट 'शिक्षा डॉट कॉम' के अनुसार वर्तमान में भारत के केंद्रीय व राज्य स्तर पर निजी तथा सरकारी स्तर के कुल 985 शिक्षण संस्थानों द्वारा पत्रकारिता एवं जनसंचार में संबंधित सर्टिफिकेट से लेकर पी.एच.डी. पाठ्यक्रमों तक की शिक्षा प्रदान की जा रही है ('टॉप मास कम्युनिकेशन कॉलेज इन इंडिया...', 2020)। इस संख्या से अन्य विषयों के बीच मीडिया शिक्षा की लोकप्रियता का पता साफ तौर पर लग जाता है।

शोध-पत्र का उद्देश्य

- सामाजिक बदलाव के संदर्भ में मीडिया शिक्षा के विभिन्न पक्षों और भूमिका को समझना।
- भारतीय संदर्भ में मीडिया शिक्षण संस्थानों की कार्य-पद्धति का अध्ययन करना।
- मीडिया शिक्षा के महत्त्व का अध्ययन करते हुए भविष्य की संभावनाओं का आकलन करना।

साहित्य समीक्षा

भारत में मीडिया शिक्षण के सौ वर्ष पूरे हो चुके हैं। इस यात्रा में मीडिया अध्ययन और अध्यापन दोनों में व्यापक बदलाव आया है। दत्ता और रे (2011) मीडिया शिक्षा की विकास यात्रा के साथ-साथ मीडिया शिक्षा के विविध आयामों पर भी चर्चा करते हुए बताते हैं कि भारत में मीडिया के क्षेत्र में प्रतिदिन हो रहे विस्तार ने मीडिया शिक्षण को अन्य पारंपरिक पाठ्यक्रमों के बीच लोकप्रिय बनाने का काम किया है। वे समाज में मीडिया की ताकत और इसके प्रभावों को केन्द्र में रखते हुए मीडिया साक्षरता को मीडिया शिक्षा का एक अनिवार्य और महत्त्वपूर्ण तत्त्व बताते हुए इसकी विवेचना करते हैं। उन्होंने अपने शोध-पत्र में भारत

[1]पीएचडी शोधार्थी जन संचार (मीडिया अध्ययन विभाग), महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी, बिहार-845401. ईमेल : vkmail93@gmail.com

Self Attested
Vikash Kumar
Scanned with CamScanner